RNI ... रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
01 FEB 2018
JALANDHAR CITY R.M.S

वर्ष: 74, अंक : 46 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 4 फरवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष–74, अंक : 46, 1-4 फरवरी 2018 तदनुसार 22 माघ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान् सबसे विशाल

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात्प्र समुद्रस्य धासेः।
प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात्प्र रिरिचे प्रक्षितिभ्यः॥

–ऋ. ८।८९।११

शब्दार्थ–इन्द्रः = इन्द्रो परमेश्वर **अक्तुभ्यः** = रात्रियों से **प्र** = बहुत **रिरिचे** = अधिक है, विशाल है और **वृधः** = विशालता के कारण **अहभ्यः** = दिनों से **प्रः** = बहुत विशाल है **अन्तरिक्षात्** = अन्तरिक्ष से **प्र** = बहुत विशाल है **समुद्रस्य** = समुद्र की **धासेः** = धारणशक्ति से, विशालता से **प्र** = बहुत अधिक विशाल है **वातस्य** = वायु के **प्रथसः** = फैलाव से **प्र** = अधिक है **ज्मः** = पृथिवी के **अन्तात्** = सिरे से **प्र** = परे है **सिन्धुभ्यः** = नदियों से, समुद्रों से, बहने वाले तरल Liquid पदार्थों से **प्र** = परे है और **क्षितिभ्यः** = रहने के स्थानों से **प्र+रिरिचे** = बहुत अधिक बढ़ा हुआ है।

व्याख्या–माता जिस प्रकार अतीव स्नेह से बालक को सरलता से ज्ञान कराती है, उसी प्रकार वेदमाता भी अत्यन्त सरलता से बालक को बोध कराती है। काल बहुत विशाल है। काल की कलना कोई न कर सका। दिन-रात में बंटा हुआ भी काल अकलनीय ही रहता है। वेद कहता है–**'कालो ह भूतं भव्यं च'** [अ० १९ ।५४ ।३] = काल ही भूत और भविष्यत् है। जब भूत-भविष्यकाल है, तो कौन कह सकता है कि भूत कितना है? कौन कहने का साहस कर सकता है कि भविष्यत् कितना है? वेद कहता है–**'प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः'** = इन्द्र अपनी विशालता के कारण रात-दिन से बड़ा है। काल की कलना की कल्पना करते विकलता छा जाती है, तो जो काल से विशाल है उसकी कलना=कल्पना कैसे हो? वह काल से विशाल प्रभु अप्रतर्क्यपरिमाण अन्तरिक्ष से भी विशाल है = **'त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः'** [ऋ० १।५२।१२] = तू इस आकाशलोक से भी परे है, अर्थात् आकाश का आकाश भी तेरे सामने कुशकाश है–**'न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः'** [ऋ० १।५२।१४] = द्यौ, पृथिवी और अन्तरिक्ष जिसकी व्यापकता=विशालता का अन्त नहीं पा सकते। वायु तो अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में बहुत-थोड़ा स्थान लेता है। उसका पसारा कितना हो सकता है?

इस मन्त्र का एक भाव और भी है, वह यह कि भगवान् इन सबमें रहता हुआ भी इन सबसे अतिरिक्त है। रिक्त=प्ररिक्त=अतिरिक्त एक पदार्थ के वाचक हैं। उद्दालक आरुणि के प्रश्न का उत्तर देते हुए याज्ञवल्क्य ने बहुत सुन्दरता से इसका निरूपण किया है–**'यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरो, यं पृथिवी न वेद, यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयति, एष त आत्मान्तर्याम्यमृतः'** (बृहदा० ३।७।३) = जो पृथिवी में रहता हुआ पृथिवी से भिन्न है, जिसको पृथिवी नहीं जानती, पृथिवी जिसका शरीर-सा है। जो पृथिवी को भीतर से नियमित करता है, वही तेरा अन्तर्यामी आत्मा अमृत है। याज्ञवल्क्यजी ने अन्तर्यामी भगवान् को अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु, द्यौ, आदित्य, चन्द्र, तारे, आकाश, तमः (अन्धकार), तेजः, सर्वभूत,. प्राण, वाणी, चक्षु, श्रोत्र, मन, त्वचा, विज्ञान (आत्मा) और रेत में रहता हुआ और उन सबसे अलग बताया है। सबमें रहता हुआ सबसे न्यारा यह तभी हो सकता है, जब सबमें रहकर बाहर भी हो। यजुर्वेद ४०।५ में कहा है–**'तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः'** = वह (भगवान्) इन सबके भीतर भी है और बाहर भी। विशाल संसार की कल्पना मनुष्य की बुद्धि में नहीं आती, तो उससे महान् भगवान् के सम्बन्ध में क्या कहा जा सकता है? सामवेद के शब्दों में इतना ही कहना पर्याप्त है–**'एतावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पुरुषः'** [साम० ६२०] = यह सब भगवान् की महिमा=महत्त्व-द्योतक है, भगवान् इससे बहुत महान् है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

वर्ष 2018 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2018 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। इस वर्ष कैलेण्डर का मूल्य पाँच रुपये प्रति तथा 500 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

अग्निहोत्र विषयक चर्चा (जल प्रोक्षण)

ले.-डा. सुशील वर्मा मास्टर मूलचन्द वर्मा गली फाजिलका पंजाब

महर्षि दयानन्द की देवयज्ञ निर्धारित पद्धति में पञ्च घृताहुतियों के पश्चात् जल प्रोक्षण की प्रक्रिया है। जल प्रोक्षण इसलिए कि कोई जीव जन्तु यज्ञ कुण्ड के समीप न आ सके। यदि यही क्रिया पहले अर्थात् यज्ञ के प्रारम्भ करने से पहले की जाती और बाद में अग्न्याधान किया जाता तो जीव जन्तु यदि कहीं कुण्ड में छिपा होता तो वह बाहर नहीं आ पाता। यज्ञ में किसी प्रकार की हिंसा नहीं होनी चाहिए इसलिए यज्ञ का एक नाम 'अध्वर' भी है अर्थात् हिंसा रहित।

यज्ञ वेदी के चारों ओर जल छिड़कने के कारण:

1. कोई भी जीव जन्तु यज्ञ वेदी के पास न आने पाए।

2. वैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि यज्ञाग्नि में आहुतियाँ ड़ालने से कुछ ऐसी भी गैसें पैदा होती है जिनके कारण समीपस्थ जल कृमि नाशक बन जाता है। ज्वलन होने पर कार्बन डाइक्साइड गैस जल के साथ फार्मेल्डीहाइड बनाती है जो कि कृमि नाशक है। क्योंकि हवा वायु को शुद्ध एवं कृमिरहित करता है, उसी तथ्य से प्रभावित हो कर्नल किंग, आई. एम. एस ने कहा था ''घरों के कृमियों के नाश करने की हिन्दुओं की विधि आधुनिक ढंग के अनुसार थी।''

3. पृथिवी के अन्दर भी अग्नि (भौम अग्नि) रहती है और पृथिवी के चारों ओर जल ही जल है। यही प्रतीक यज्ञकुण्ड के गर्भ में अग्नि और चारों ओर जल का है।

''अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'' (यजु 23/62) यह यज्ञ तो सारे ब्रह्माण्ड की नाभि है। अध्यात्म में इसे ऐसे समझे कि हवन कुण्ड जहाँ अग्नि प्रज्वलित हो रही है वह प्रकाश लोक है, जहाँ यजमान बैठा है वह मर्त्यलोक पृथिवी है और इन दोनों के मध्य जल है। जिस जगह जल है उसके दो किनारे हैं-यजमान की तरफ वाला किनारा 'श्रद्धा' का प्रतीक और प्रकाश अर्थात् हवन कुण्ड की तरफ वाला किनारा 'त्याग' का प्रतीक। इस प्रकार श्रद्धा और त्याग के मध्य प्रेम का जल भरा हुआ है। अग्नि अपनी ज्वाला से प्रेम के जल को अमृत रूप में भाप बनाकर 'भूः' से भुवः और अन्ततः स्वः लोक का सम्बन्ध जोड़ रही है अर्थात् मर्त्यलोक से प्रकाश लोक की यात्रा का यह साधन-'यज्ञ'।

जल प्रोक्षण की क्रिया सम्बन्धी विधि का स्वामी जी ने तो केवल दिशाओं का उल्लेख किया है कि पहले मन्त्र से पूर्व में, दूसरे से पश्चिम में, तीसरे से उत्तर में और चौथे से वेदी के चारों ओर जल छिड़कें। वहाँ यह निर्देश नहीं है कि किस दिशा से किस ओर जल छिड़कें। इसका उत्तर आज विद्वतजन अपने अपने ढंग से दे रहे हैं। जहाँ तक मैं इसे समझ पाया हूँ कि पहले तीन मन्त्र स्वामी जी ने गोभिल गृह्य सूत्र (1.3.1.3) तथा आपस्तम्बगृह्य सूत्र (1.2.3) से उद्धृत किए हैं इसलिए हमें उसी का अनुसरण करना चाहिए। इस प्रकार है यह सूत्र-

अदितेऽनुमन्यस्वेति दक्षिणतः प्राचीनम्

अनुमतेऽनुमन्यस्वेति पश्चादुदीचीनम्।

सरस्वत्येनुमन्यस्वेति उत्तरतः प्राचीनम्

देव सवितः प्रसुवेति समन्तम्

(आपस्तम्बगृह्यसूत्र 1.2.3)

अर्थात् जल सिंचन की गति पूर्वाभिमुख (प्राचीनम्) तथा उत्तराभिमुख (उदीचीनम्) होगी।

तात्पर्य यह है कि पूर्व और पश्चिम में जल छिड़केगें तब दक्षिण से उत्तर और जब उत्तर में जल छिड़केगें तो पूर्व दक्षिण कोण से आरम्भ करके दक्षिण पश्चिम उत्तर पूर्व इस क्रम से प्रदक्षिणा की तरह जल प्रोक्षण करते हुए पूर्व दक्षिण कोण पर जहाँ प्रारम्भ किया या वहीं पहुँचकर विश्राम देगें। इस प्रकार जल की गति पूर्व व उत्तर में होनी है। ज्यादा विवाद में पड़ने की आवश्यकता नहीं।

अब मन्त्रों के विषय में चर्चा की जाए। आपको विदित ही है कि पहले तीन मन्त्र गोभिल एवं आपस्तम्ब गृह्य सूत्रों से हैं और चौथा मन्त्र यजुर्वेद के 30वें अध्याय का पहला मन्त्र है पहला मन्त्रः ओ३म् अदितऽनुमन्यस्व। (पूर्व दिशा में जल छिड़कें) मन्त्रार्थ-हे सर्वरक्षक (अदिते) अखण्ड परमेश्वर (अनुमन्यस्व) मेरे इस कर्म का अनुमोदन करो अर्थात् मेरा यह यज्ञ अनुष्ठान अखण्डित रूप से होता रहे।

अथवा तो पूर्व दिशा में जल सेंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रसार प्रचार निर्विघ्न रूप से कर सकूँ।

2. दूसरा मन्त्र-ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व (पश्चिम दिशा में जल छिड़कें)

हे सर्वरक्षक (अनुमते) यज्ञीय एवं ईश्वरीय संस्कारों के अनुकूल बुद्धि प्रदत्त करने में समर्थ परमेश्वर। (अनुमन्यस्व) मेरे इस यज्ञ कर्म का अनुकूलता से अनुमोदन करो।

अथवा तो पश्चिम दिशा में जल सिंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार आपकी कृपा से कर सकूँ।

3. तीसरा मन्त्र-ओ३म् सरस्वतेऽनुमन्यस्व (उत्तर दिशा में जल छिड़कें)

हे सर्वरक्षक (सरस्वते) ज्ञानस्वरूप एवं ज्ञान प्रदाता परमात्मन! (अनुमन्यस्व) मेरे इस यज्ञ कर्म का अनुमोदन करो।

अथवा तो उत्तम बुद्धि से यह यज्ञानुष्ठान सम्यक् विधि से सम्पन्न होता रहे।

4. (देव सवितः) हे प्रकाशक प्रेरक परमेश्वर! (यज्ञ प्रसुव) यज्ञ को प्रेरित करो (यज्ञपति प्रसुव) मुझ यजमान को प्रेरित करो। (भगाय) जिससे उत्कृष्ट फल की प्राप्ति हो। (गन्धर्वः) आप विलक्षण ज्ञान के प्रकाशक हो, पवित्र वेदवाणी अथवा पवित्र ज्ञान के आश्रय हो। (केतपूः) ज्ञान विज्ञान से बुद्धि मन को पवित्र करने वाले हो।

अतः हमारे (केतं पुनातु) बुद्धि मन को पवित्र कीजिए। (वाचस्पतिः) वाणी के स्वामी हो। अतः हमारी वाणी को (स्वदतु) मधुर बनाइए।

अथवा तो चारों दिशाओं में जल सिंचन के सदृश मैं यज्ञीय पवित्र भावनाओं का प्रचार प्रसार कर सकूँ। इस कर्म के लिए मुझे उत्तम ज्ञान, पवित्र आचरण और मधुर वाणी में मुझे समर्थ बनाइए।

आइए इन मन्त्रों को आधिदैवत और अध्यात्म परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश करते है। इस पर चिन्तन करते है।

इन मन्त्रों में चार देवता है-अदिति, अनुमति, सरस्वती एवं सविता

अदितिः आधिदैवत में अदिति है प्राची की उषा (उषाएँ यज्ञ की प्रेरक हैं। अध्यात्म में अदिति अजर अमर जीवात्म शक्ति ये सब यज्ञ को उत्पन्न करती हैं। ''अजीजनन् सूर्य यज्ञमाग्निम्'' (ऋक् 7.78.3) इसके अतिरिक्त यदि आत्मा का समर्थन न हो तो मनुष्य यज्ञ में प्रवृत नहीं हो सकता। अदिति तो आत्म यज्ञ की नौका है ''सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्'' (यजु 21.6)

अनुमतिः आधिदैवत में अनुमते है पश्चिम सन्ध्या। यह भी यज्ञ को उद्बुद्ध करती है। अध्यात्म में बुद्धि एवं मन अनुमते है इस प्रकार अनुकूल निश्चय करने वाली बुद्धि विद्वानों में हमारे द्वारा किए जाने वाले यज्ञ का अनुमोदन करें।

सरस्वतीः आधिदैवत में उत्तरायण की सूर्य प्रभा सरस्वती है यह भी अपने चरित्र एवं गुणों से यज्ञ की प्रेरिका है।

अध्यात्म में सरस्वती वाणी है, वाणी द्वारा ही मन्त्रोच्चारण सम्भव है। इसलिए मन्त्रोच्चारण व यज्ञ की महिमा का गान भी सरस्वती (वाणी) द्वारा होने के कारण इस का अनुमोदन आवश्यक है।

सविताः आधिदैवत में सूर्य सविता है और सूर्य द्वारा ही सम्वत्सर रूपी यज्ञ चलता है। अध्यात्म में सविता प्रेरक परमेश्वर है। इसलिए हे सविता! चाहे हम सूर्य रूप में लें, चाहे प्रेरक परमेश्वर प्रतीक वह मेरे अन्दर सदा यज्ञ की प्रेरणा प्रदान करता रहे।

इस प्रकार तीनों ही मन, बुद्धि एवं आत्मा व वाणी हमें यज्ञ के लिए प्रेरित करते रहें और हमारे यज्ञ का अनुमोदन करें ऐसी हमारी प्रार्थना है।

अन्तिम मन्त्र में उसी परमात्मा का गुणगान है। वही गन्धर्वः है अर्थात् आत्मा रूपी गौ को धारण करने वाला। वही केतपू अर्थात् मन बुद्धि एवं विचारों को पवित्र करने वाला। वही वाचस्पति अर्थात् वाणी का स्वामी है। वही इसे मधुर बनाए।

अन्ततः यही सारांश है कि स्वामी जी ने जल सेंचन द्वारा इन मन्त्रों का विनियोग कर उस परमपिता परमात्मा से यज्ञ अनुमोदन की प्रार्थना यज्ञकर्त्ता द्वारा करवाई। जहाँ उस परमसत्ता का अनुमोदन है, प्रेरित है, तो फिर यज्ञ तो यज्ञमयी भावना से सम्पन्न होगा ही। प्रार्थना हम याज्ञिकों को यज्ञ में प्रेरित करे और हम यज्ञमयी हो कर अपना जीवन यापन करें।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवं ऋषि बोधोत्सव पर्व धूमधाम के साथ मनाएं

10 फरवरी 2018 को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं 13 फरवरी को ऋषि बोधोत्सव पर्व आ रहे हैं। ये दोनों दिवस आर्य जगत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। आर्य समाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार के कल्याण के लिए जो कार्य किए हैं उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। 10 फरवरी को सभी आर्य समाजें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस धूमधाम के साथ मनाएं। आर्य जगत् के लिए ये दोनों दिवस किसी त्योहार से कम नहीं हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज के कल्याण के लिए जो कार्य किए हैं, पाखण्ड और अन्धविश्वास को समाप्त करने के लिए जो कार्य किए हैं, इसकी प्रेरणा उन्हें शिवरात्रि के पर्व पर व्रत रखने पर मिली थी। सारी रात जागने पर मूलशंकर ने जब मूर्ति पूजा की निःसारता को देखा तो उन्होंने सच्चे शिव की खोज करने का संकल्प लिया। उसी के परिणामस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की और राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान की। इसलिए हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि इस दोनों दिवसों को धूमधाम के साथ और उत्साहपूर्वक मनाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस से लेकर शिवरात्रि के पर्व तक अपनी-अपनी आर्य समाजों को दीपमाला के प्रकाश से प्रकाशित करें।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का इस संसार में आगमन भारत के भाग्योदय का कारण बना। अगर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस संसार में न आते, शिवरात्रि के पर्व पर उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रेरणा न मिलती तथा उस प्रेरणा के फलस्वरूप सच्चे गुरू की खोज के लिए गृह त्याग नहीं करते तो आज राष्ट्र का स्वरूप क्या होता, इसकी कल्पनामात्र करना भी भयावह है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने विचारों को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए आर्य समाज की स्थापना करके एक नए युग का सूत्रपात किया था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। जितना सन्मार्ग महर्षि दयानन्द ने दिखाया है, जितना कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द ने आवाज उठाई है, नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाने के लिए जितना संघर्ष महर्षि दयानन्द ने किया है उतना किसी अन्य महापुरूष ने नहीं किया। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास के ऊपर जमकर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार,विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम भी महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोधोत्सव के पर्व पर हम अपने-अपने क्षेत्रों में आर्य समाज के प्रचार की योजनाएं बनाएं। वर्तमान में आर्य समाज के सार्वभौमिक सिद्धान्तों एवं नियमों से लोगों को तथा युवा पीढ़ी को जागरूक करने के अति आवश्यकता है। अगर इस योजना के अनुसार आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया जाता है कि हमें महर्षि के ऋण से उऋण होना है तथा समाज का कल्याण करना है तो फिर हमें महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस और बोधोत्सव दोनों ही उत्साहपूर्वक मनाने चाहिए और अधिक से अधिक संख्या में लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़ना चाहिए।

आर्य समाज के नियमों को बनाते समय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे पूरा करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने राष्ट्र का नहीं, आर्य समाज का नहीं अपितु संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं। महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम लोगों को आर्य समाज के बारे में जानकारी दें। आर्य समाज के बारे में आम जनता में जो भ्रान्तियां फैल चुकी हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का यही उद्देश्य था कि समाज में धर्म के नाम पर जो आडम्बर दिखाई दे रहा है, मूर्ति पूजा के कारण जो अन्धविश्वास फैल रहा है, सम्प्रदायवाद के कारण जो लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, उन्हें दूर किया जा सके। सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर सभी लोग संगठित होकर विदेशियों की दासता से मुक्त हों। महर्षि दयानन्द किसी नए पन्थ की मत की स्थापना नहीं करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखते हैं कि- मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आय्यावर्त्त में प्रचरित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्था के अधिकारियों से निवेदन है कि वे महर्षि के जन्मदिवस एवं बोधोत्सव पर्व को समारोहपूर्वक मनाएं। अपनी-अपनी संस्थाओं को दीपमाला के साथ सजाएं और इन दोनों दिवसों पर कार्यक्रमों का आयोजन करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सम्पूर्ण जीवनवृत्त तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों से लोगों को अवगत कराएं। शिवरात्रि के पर्व पर किस प्रकार बालक मूलशंकर के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित हुई, यह हम सभी आर्यों के लिए प्रेरणादायक है। वही पर्व सार्थक होता है जिससे हम कुछ प्रेरणा लेते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को बोध होने के कारण शिवरात्रि का पर्व भी आर्य जगत के लिए बोध पर्व बन गया है। ऐसे पवित्र विचारों के उद्घोषक, तथा प्राणिमात्र का हित चाहने वाले, सारे संसार का भला चाहने वाले, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस तथा बोधोत्सव मनाते हुए हमारा लक्ष्य उनके सिद्धान्तों का प्रचार- प्रसार होना चाहिए। अधिक से अधिक जनता को आर्य समाज के साथ जोड़े। वेदों को, सत्यार्थ प्रकाश को तथा महर्षि दयानन्द जी के अन्य ग्रन्थों को पढने की प्रेरणा दें। लोगों में वैदिक साहित्य बांटकर उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहूति 11 फरवरी को

स्त्री आर्य समाज जालन्धर छावनी में हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी माघ मास का दुःखनिवारक सुखवर्षक गायत्री महायज्ञ 14 जनवरी से शुरू हो गया है। इस हवन यज्ञ में जालन्धर छावनी के आर्य जन एवं नागरिक बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं। निरन्तर एक मास तक चलने वाले इस गायत्री महायज्ञ में सभी श्रद्धालुओं के द्वारा आहुतियां प्रदान की जा रही हैं। अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः इस वेद वाक्य के अनुसार यह यज्ञ इस संसार की नाभि के समान है। इसलिए यज्ञ को शास्त्रों में श्रेष्ठतमं कर्म कहा गया है। इस श्रेष्ठ कर्म यज्ञ को करने से याज्ञिक की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं। स्त्री आर्य समाज जालन्धर छावनी के द्वारा प्रतिवर्ष इसी भावना के साथ माघ महीने में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा सभी श्रद्धालु इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। इस हवन यज्ञ की पूर्णाहूति 11 फरवरी 2018 को होगी। सभी नगर निवासियों से निवेदन है कि इस महायज्ञ में पधार कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

-सुदेश महाजन कोषाध्यक्ष, स्त्री आर्य समाज

वायु प्रदूषण

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सजीव जगत् के लिए जीवित रहने के लिए वायु, जल और अन्न इन तीनों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। भोजन के अभाव में प्राणी एक माह तक, जल के अभाव में अधिक से अधिक एक सप्ताह तक जीवित रह सकता है परन्तु प्राण वायु के अभाव में तो कुछ क्षण भी जीवित रहना असंभव है। शुद्ध वायु के अभाव में हमारे प्राण कुछ क्षणों में ही अभाव ग्रस्त हो जाते हैं हममें से प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन लगभग 22000 बार श्वास लेता है उसके लगभग 16 कि.ग्रा. वायु की आवश्यकता होती है। प्रकृति में वायु सबसे अधिक मात्रा में पायी जाती है। वायु पृथ्वी के चारों ओर लगभग 800 कि.मी. ऊपर तक फैला हुआ है।

हम सब प्राणी वायु के सागर की तहलटी में निवास करते हैं। वायु का महत्व हमारे लिए एक दूसरी दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हमारे शरीर में रक्त वाहिनियों में बहता हुआ रक्त बाहर की ओर दबाव डालता है। यह दबाव प्रत्येक वर्ग इंच पर लगभग 15 पौण्ड होता है। यह दबाव अन्दर से बाहर की ओर होता है। यदि इसे सन्तुलित नहीं किया जाये तो हमारे शरीर की सभी धमनियां फट जाएंगी। फिर जीवन की कल्पना आकाश-कुसुम के समान हो जायेगी। वायु का सागर इसे सन्तुलित करता है। 800 कि.मी. ऊपर की तरफ फैली हुई वायु का दबाब भी हमारे शरीर के प्रत्येक वर्ग इन्च पर लगभग 15 पौण्ड होता है जो बाहर से अन्दर की ओर दबाव डालता है। इस प्रकार दोनों दबाव मिलकर शून्य हो जाते हैं और हमारा जीवन अबाध गति से चलता रहता है।

वायु प्रदूषण की परिभाषा-वायु मण्डल में पायी जाने वाली गैसें एक निश्चित अनुपात में् होती है। वायु मण्डल में लगभग 78 प्रतिशत नाइट्रोजन 21 प्रतिशत ऑक्सीजन 0.3 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड तथा शेष निष्क्रिय गैसें होती है। ये गैंसे मिश्रण के रूप में रहती है। स्वस्थ जीवन के लिए वायु का शुद्ध होना अनिवार्य है। शुद्ध वायु में प्रदूषणों का अभाव रहता है।

जब वायु के अवयवों में अवांछित तत्व प्रवेश कर जाते हैं तब उसका मौलिक स्वरूप बिगड़ जाता है जो मानव तथा जीवधारियों के लिए घातक होता है। इसमें विभिन्न प्रकार की गैसें, कार्बन के कण, धुंआ, खनिजों के कण आदि सम्मिलित रहते हैं, वायु के दूषित होने की यह प्रक्रिया ही वायु प्रदूषण कहलाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायु प्रदूषण एक ऐसी स्थिति है। जिसमें बाह्य वातावरण में मनुष्य और उसके पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले तत्व समान रूप से एकीकृत हो जाते हैं। वायु प्रदूषण स्थानीय बहुत बड़े क्षेत्र तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है। इसके लिए भौगोलिक सीमाओं का कोई बन्धन नहीं है।

वायु की तीनों प्रमुख गैंसे नाइट्रोजन, आक्सीजन और कार्बन डाई आक्साइड हमारे जीवित रहने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हम श्वास के द्वारा जो वायु फेफड़ों के अन्दर ले जाते हैं उसमें से केवल आक्सीजन रक्त में मिली हुई अशुद्धियों को जला कर नष्ट कर देता है फिर फेफड़े से शुद्ध रक्त हृदय में जाता है और वहां से रक्त वाहिनियों के द्वारा पुनः शरीर में परिभ्रमण करने के लिए भेज दिया जाता है। वायु में मिली हुई नाइट्रोजन आक्सीजन के जलाने की शक्ति के नियंत्रित करती रहती है। श्वास छोड़ते समय हवा में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा अधिक होती है। इसके अधिक होने का कारण स्पष्ट है। फेंफड़ों में रक्त में मिली हुई कार्बन अशुद्धियों के आक्सीजन द्वारा जलाए जाने से यह उत्पन्न होती है। कार्बन डाई आक्साइड के अधिक होने और आक्सीजन के कम होने से यह गैस पुनः श्वास लेने के योग्य नहीं होती है। इसे शुद्ध करना आवश्यक है। इस कार्य में पेड़-पौधे हमारी सहायता करते हैं। पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश में हमारी सहायता करते हैं। पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश में इस वायु में से कार्बन डाई आक्साइड को सोख लेते हैं तथा संश्लेषण क्रिया द्वारा क्लोरोफिल की उपस्थिति में इसमें से कार्बन अपने लिए रख लेते हैं, जिनसे उनका विकास होता है तथा आक्सीजन निकाल देते हैं जो हमारे लिए उपयोगी है।

हमारे शरीर की रचना में हडिड्यों के अभाव में शरीर एक गेंद के समान रहता, उस स्थिति में हम कतई असहाय रहते। फिर किसी भी प्रकार की उन्नति की कल्पना ही नहीं होती। हड्डियों के निर्माण में प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह प्रोटीन हमें नाइट्रोजन चक्र द्वारा प्राप्त होता है। राइजेबियम नामक जीवाणु नाइट्रोजन को मिट्टी के नाइट्रेट में बदल देता है। ये नाइट्रेट लवण पोषक पदार्थों के रूप में पौधों द्वारा मिट्टी से ग्रहण किये जाते हैं और भोजन के द्वारा प्राणियों के शरीर में पहुंच जाते हैं। पाचन क्रिया के फल स्वरूप इनका रूपान्तरण प्रोटीन में हो जाता है। फिर अमोनिया गैस बनती है जिसका कुछ अंश वायु मण्डल में मिल जाता है और शेष मिट्टी के नाइट्रेट लवणों में बदल कर पुनः चक्कर में भाग लेने लगता है।

इस प्रकार हमारे जीवन में वायु के तीनों प्रमुख भाग नाइट्रोजन, आक्सीजन और कार्बन डाई आक्साइड प्रभाव डालते हैं। शुद्ध सन्तुलित वायु हमें अरोग्यता प्रदान करती है। आरोग्यता के साथ ही यह हमारी आयु को बढ़ाती भी है। शुद्ध वायु एक प्रकार का भेषज भी है जो नाना प्रकार के रोगों को हमसे दूर करती है।

वेदों में इन सबका सामान्य वर्णन हुआ है तथा वायु शुद्धि के तरीके भी बताये गए हैं। आओ। अब हम वेद के आधार पर चर्चा करें। वायु सर्वत्र फैली हुई है तथा उसे दो भागों में विभाजित किया जा सकता है एक शुद्ध वायु और दूसरी अशुद्ध वायु।

द्वा विमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।

दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।। ऋ. 10.137.2

अर्थ-(इमौ) ये (द्वा) दो (वातौ) वायु (वातः) प्रवाहित होते हैं, एक तो (आ सिन्धोः) सागर से और दूसरा (आ परा वतः) दूर स्थित भाग से। इन दोनों में से (अन्य) एक तो (दक्षम् आ वातु) बल, जीवन तथा उत्साह देता है और दूसरा (यत् रपः) जो देश स्थित मल (दुर्गन्ध) को (परा वातु) दूर ले जाता है।

इसी भांति शरीर में जाने वाला वायु देह को बल देता है और बाहर निकाला हुआ वायु हमारे शरीर के रोग उत्पन्न करने वाले अंश को निवारता है, नष्ट कर देता है।

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।

त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे।। ऋ. 10.137.3

अर्थ-हे (वात) वायु। तू (भेषजं आ वाहि) व्याधि को मिटाने वाला बल दे। (यत् रपः) जो रोग पैदा करने वाले हों उन्हें (वा वाहि) भांति-भांति से निकाल दे। (त्वं) तू (विश्व भेषजम्) सकल रोगों का निवारक तथा इन्द्रियों में मल को तपाता है, नष्ट कर देता है। शुद्ध वायु आरोग्यता प्रदान कर हमारी आयु को बढ़ाता है।

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।

स नो जीवातदे कृधि।। ऋ. 10.186.2

अर्थ-(उत) और (वातः) वायु (न) हमारा (पिता) पालक (उत) और (भ्राता) भाई के समान पोषण करने वाला (उत) और (नः) हमारा (सखाः) मित्रवत् कल्याणकारी है। वह (नः) हमें (जीवातवे) जीवित रहने के लिए (कृधि) करता है।

मनुष्य को वायु प्रवाह का ज्ञान प्राप्त कर तथा वायु को शुद्ध करने की विधि को जानकर अपने जीवन को सुखी बनाना चाहिए।

मरूतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाने अवन्तु।

आशुनिव सुयमानह्वे ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। अथर्व. 4.27.1

अर्थ-(मरूताम्) दोष नाशक वायु का (मन्वे) मैं मनन करता हूँ। (मे) मेरे लिए (अधि) अनुग्रह से (ब्रुवन्तु) बोलें और (इमम्) इस (वाजम्) बल को (वाजसाते) अन्न के सुख अथवा दान के निमित्त (प्र) अच्छे प्रकार (अवन्तु) तृप्त करें। (आशुन इव) शीघ्रगामी घोड़ों के समान (सुयमान्) उन सुन्दर नियम वालों को (ऊतये) अपनी रक्षा के लिए (अह्वे) मैंने पुकारा है। (ते) वे (नः) हमें (अंहसः) कष्ट से (मुञ्चन्तु) छुड़ावें।

वायु का पाचन क्रिया में भी महत्वपूर्ण भाग होता है। वायु वेग द्वारा अन्न-जल मिलकर शरीर की रक्षा के लिए रक्त, मांस आदि पदार्थ उत्पन्न होते हैं। इस विचार को निम्न मंत्र स्पष्ट कर रहा है-

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन वा वयो मेदसा संसृजन्ति।

ये अद्भि रीशाना मरूतो

(शेष पृष्ठ 6 पर)

वेद शक्ति

ले.-अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

1. तिरुपति बालाजी-समस्त स्त्रोतों से आय 6 करोड़ 35 लाख प्रतिदिन है।

2. वैष्णों देवी-500 करोड़ प्रतिवर्ष

3. शिरडीं साईबाबा, नासिक 350 से 450 करोड़ प्रतिवर्ष

4. शबरीमाला केरल-वार्षिक 230 करोड़

5. जगन्नाथ पुरी-वार्षिक 150 करोड़

6. सिद्धि विनायक, मुम्बई-वार्षिक 48 करोड़

7. सत्य साई बाबा, पुट्टपार्थी, बैंगलुरु 40 हजार करोड़ के स्वामी थे।

यह तो गिने-चुने मंदिर के बारे में जानकारी दी है। देश में लाखों मन्दिर है, उनकी आय के बारे में अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

संदर्भित मन्दिरों में भक्तगण ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का समय ही नहीं पाते। दिनों-घण्टों पंक्ति में खड़े होने पर जब नम्बर आता है तो 10-5 सैकण्ड में धकिया दिए जाते है। दर्शन हो गए यही पर्याप्त है बाकी सब कुछ भगवान देख लेंगे। भक्त भी क्षणमात्र के दर्शन से पूर्णतया संतुष्ट-भगवान भरोसे छोड़कर निश्चिन्त।

इस अकूत आय के स्त्रोत आम धार्मिक भीरु जन हिन्दु नहीं हो सकते। यह आय तो भ्रष्टतम व्यापारी वर्ग, राजनीतिक नेता, और शासकीय कर्मचरियों के दान की ही होनी चाहिए। आइए देखें क्यों ये लोग इतना अधिक दान-पुण्य करते हैं। इनकी आय के स्त्रोत क्या हैं।

व्यापारी वर्ग जो अकूत लाभ के लिये, समस्त उपाय यथा कर-वंचन, डुप्लीकेट लेखे रख कर कम लाभ बताना, बिना बिल बनाए व्यापार करना, संसाधनो की कमी बता कर, कई गुना दामों की वृद्धि, काले धन को सफेद धन में बदलने वाले लोग आदि, आदि

2. शासकीय सेवाओं में कार्यरत कर्मचारीगण, जिनमें सर्वोच्च पदों से लेकर निम्न श्रेणी के कर्मचारी आते है। ये लोग पूरी तन्मयता संलग्नता से अपने दायित्व का निर्वहन नहीं करते, वेतन-भत्ते चाहे कितने ही अधिक क्यों न हों, संतुष्ट न होकर सरकारी काम करने के लिये उत्कोच-घूस लेते हैं, जम कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त भी कई तरह के हथकण्डे अपना कर धन अर्जित करते है।

(3) शिक्षा व चिकित्सा व्यवसाय में अनैतिक रूप से धन की लूट करने वाले लोग इस तरह की आय करने वाले लोगों की सूची पर कहीं विराम लगता दिखता नहीं। जीवन का कोई भी क्षेत्र उनसे छूटा नहीं है तभी तो ये लोग 70-80 करोड़ का आंकड़ा बनाते हैं।

ये अशांत-चित्तमनोवृत्ति लोग हैं जो ऐसा ईश्वर चाहते हैं-देखे-सुने सब बोले नहीं और उनकी मनोकामना पूरी करे और कृत पापों से मुक्ति दिलावे। इसीलिये घास-फूस, मिट्टी, पत्थर तथा धातु से निर्मित भगवानों को 'प्राण-प्रतिष्ठा' हो जाने पर जाग्रत देवता मान कर पूजा करते हैं। विष्णु भगवान हैं तो ग्वालियर का बिड़ला मन्दिर, दिल्ली का बिड़ला मन्दिर, हैदराबाद का बिड़ला मन्दिरों में विष्णु की ही मूर्ति है। प्रत्येक स्थान की मूर्ति का विष्णु एक ही स्वभाव, गुण, कर्म सम्पन्न होना चाहिए जितना तिरुपति बालाजी का विष्णु मन्दिर। फिर भी ग्वालियर देहली व हैदराबाद का हिन्दु तिरुपति बालाजी क्यों जाता है? क्या वह अधिक प्रभावकारी, शक्तिशाली है? या भक्तों की आत्मा ही उन्हें यहां से वहां भटका रही है।

और इस सब व्यवस्था को बनाए रखने के लिये संन्यासियों विद्वानों, साधू-संत, मठाधीशों का पर्याप्त जन बल भी है। चारों मठों के जगत्गुरु शंकराचार्य। लम्बी गौरवर्ण काया, उज्जवल समुन्नत भाल पर त्रिपुण्ड चन्दन का तिलक। अत्यन्त सम्मोहक, समधुर वाणी सरल शुद्ध हिन्दी में उद्बोधन। ग्वालियर में अनेक बार उनके प्रवचन हुए। सभी प्रवचनों में प्रबल उत्सुकता से सपत्नीक गया। डी. ए. वी. कालेज, कानपुर से पोस्टग्रेजुएट स्वामी जी महाराज, महर्षि दयानन्द के मार्ग पर न चल कर, संत शिरोमणि तुलसीदास जी के मार्ग पर क्यों चले; आश्चर्य तब भी था और आज भी है। इतनी महान विभूति को किसी 'ऐष्णा' में बांधने की औकात मेरी नहीं है।

यह तो बात हुई 80-90 करोड़ हिन्दुओं की जो मूर्तिपूजा के मकड़जाल में फंसे हुए हैं और खुद भी इस जंजाल से निकलना नहीं चाहते। उन्हें महर्षि दयानन्द द्वारा वेदोक्त ईश्वर किसी भी हालत में स्वीकार नहीं होगा क्योंकि वह निराकार है, उसकी पीठ पीछे या उसे तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये 'पत्थर' मान कर, नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है वह 'सर्वव्यापक' भी है। इन दोनों गुणों से वह सब कुकर्मों को स्वयं जानता है वह क्षमाशील माफ करने वाला भी नहीं है क्योंकि वह न्यायकारी है जज है। सब कर्मों-कुकर्मों का न्यायोचित फल देता हैं।

अब जरा 32 करोड़ का भी हिसाब देखिए। लगभग 20 करोड़ मुसलमान (वर्तमान पाकिस्तान की कुल आबादी तथा महर्षि दयानन्द के समय कुल भारत की आबादी के बराबर) बौद्ध, ईसाई, सिख और जैन मतावलम्बी हैं। इनमें से कितने लोग महर्षि दयानन्द के वेदोक्त ईश्वर मानेगे, सोचा भी नहीं जा सकता।

इस प्रस्तुति के पश्चात् मैं, आर्य संन्यासियों, विद्वानों, संगठन के कर्णधारो से नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहूंगा कि वे परिस्थिति का आकलन करें, कार्यक्रम सुनिश्चित बनावे जिससे वैदिक, धर्म को, महर्षि दयानन्द के निर्देशों के सम्बन्ध में, कृण्वन्तो विश्व आर्यम् जयघोष को सार्थक बनाने के लिये क्या किया जाना चाहिए।

मेरा निवेदन है कि सभी मतभेदों को, मन भेदों को भुला कर, सबसे पहले संगठन मजबूत किया जावे। मुम्बई प्रतिनिधि सभा के आदरणीय महामंत्री भी अरुणकुमार अबरौल जी ने दूरभाष पर बताया कि फरवरी 2017 के हैदराबाद सम्मेलन में उठाए गए प्रयास सार्थक रूप में बढ़ रहे हैं। आर्य जगत के लिये यह अत्यन्त शुभ समाचार है। संन्यासियों, विद्वानों का संगठन वैदिक वेद शक्ति के रूप में उभरेगा। आर्थिक पक्ष भी मजबूत कार्य होगा आर्थिक रूप से सहयोग करने वालों का उत्साह वर्धन होगा। सभी तरह कल्याण होने की सुंगध मैं, अनुभव कर रहा हूँ।

गणतन्त्र दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस मनाया गया। आर्य समाज के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने मिलकर विश्व कल्याणार्थ यज्ञ किया। तत्पश्चात आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य जी ने तिरंगा फहराया। आर्य समाज की भजन गायिका श्रीमती सोनू भारती जी ने देशभक्ति के भजन सुनाकर देश पर कुर्बान होने वाले वीर शहीदों को याद किया। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने गणतन्त्र दिवस का महत्व बताते हुए कहा कि आज के दिन 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ था। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतन्त्र राज्य घोषित किया गया था। तब से लेकर हम इस दिन को सारे भारत वर्ष में राष्ट्रीय स्तर पर मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन से भारत वर्ष ने गुलामी से मुक्त होकर नया जीवन जीना शुरू किया था और साथ ही लोकतान्त्रिक गणराज्य की नींव रखी गई थी। इसलिए हमें इस अवसर पर अपने देश के महान् शहीदों को तथा देश की आजादी में योगदान देने वाले महापुरूषों को याद करना चाहिए। इस अवसर पर आर्य समाज के मन्त्री श्री हर्ष लखनपाल, ईश्वर चन्द्र रामपाल, चौ. हरिचन्द, भूपेन्द्र उपाध्याय, सुरिन्द्र अरोड़ा, विजय चावला, ओम प्रकाश मैहता, पूनम मैहता आदि उपस्थित थे।

हर्ष लखनपाल मन्त्री आर्य समाज

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

पृष्ठ 4 का शेष-वायु प्रदूषण

वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः।। अथर्व. 7.27.5

अर्थ-(ये) जो मरूतगण (वयः) जीवन को (कीलोलेन) अन्न से और (ये) जो (घृतेन) जल से (तृप्तपन्ति) तृप्त करते हैं (वा) और (ये) जो (मेदसा) चर्बी से (संसृजन्ति) संयुक्त करते हैं और (ये) जो (ईशानाः) समर्थ (मरूतः) वायु गण (अद्भिः) जल से प्राणियों को (वर्षयन्ति) सींचते है (ते) वे (नः) हमें (अंहसः) कष्ट से (मुञ्चन्तु) छुड़ावें।

वायु प्रदूषण के स्त्रोत-

1. ताप बिजलीघर-हमारे देश में ताप बिजली घर वायु प्रदूषण के मुख्य स्त्रोत हैं। हमारे देश में 75 बड़े ताप बिजली घर हैं। कुल ऊर्जा उत्पादन में इनका योग 65 प्रतिशत के लगभग है? ताप बिजली घर के संयन्त्रों के अवशेषों में राख, कालिख और सल्फर डाई आक्साइड आदि निकलते हैं। भारतीय कोयलों में 1 प्रतिशत गंधक का अंश होता है जो बहुत कम है। एक साधारण बिजली घर कम गंधक वाला कोयला जलाता है उससे 50 टन सल्फर डाई आक्साइड और उससे भी अधिक राख उत्पन्न होती है।

2. रासायनिक खाद्य के कारखाने-भारत में रासायनिक खाद्य के 72 कारखाने हैं। इन कारखानों से बहुत अधिक मात्रा में वायु प्रदूषक द्रव्य निकलते हैं। इनमें अमोनिया गैस, हाइड्रो कार्बन आदि भिन्न कणीय द्रव्य प्रमुख है।

3. जीवनाशी रसायनों के प्रयोग से-हानिकारक जीवों से बचाव हेतु पौधा सुरक्षा रसायन का छिड़काव किया जाता है। उसकी कुछ मात्रा पृथ्वी पर आ जाती है किन्तु कुछ मात्रा वातावरण में ही रह जाती है। कुछ कृषि रसायन वाष्पित होकर वायु मण्डल को दूषित कर देते हैं।

4. सूती कपड़े की मिलें-सूती कपड़ों की मिलों के आस-पास के क्षेत्रों में रूई के रेशे या धूल की पतली सी परत छाई रहती है। इसके अतिरिक्त वहां धुयें के बादल भी छाये रहते हैं। इनसे मिलों के अन्दर काम करने वाले मजदूरों तथा मिलों के क्षेत्र में रहने वाले मनुष्य को दमा और तपेदिक के रोग घेर लेते हैं।

5. यातायात के साधन-हमारे देश के शहरों में बढ़ते हुए यातायात के साधन वायु प्रदूषण के महत्वपूर्ण स्त्रोत है। वाहनों से निकलने वाले धूएं में कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड हाइड्रो कार्बन, ऐल्डिहाइड, लेड आक्साइड आदि प्रमुख हैं। ये वायु मण्डल को प्रदूषित करते हैं।

6. घरेलू प्रदूषण-हमारे देश में कुल ऊर्जा उपभोग का लगभग 50 प्रतिशत भाग रसोई आदि के काम में आता है। भोजन पकाने में उपयोग की जाने वाली ऊर्जा का लगभग 90 प्रतिशत गैर वाणिज्यिक ऊर्जा स्त्रोतों से प्राप्त होता है और वाणिज्यिक ऊर्जा स्त्रोतों में जलाऊ लकड़ी, कृषि कचरा, पशुओं का गोबर आदि मुख्य है। ये वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी हैं। हमारे देश में वायु प्रदूषण केवल बड़े शहरों में ही नहीं हो रहा है वरन् छोटे-छोटे शहर और गांव भी वायु प्रदूषण से ग्रसित है।

वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव-

1. घरों में खाना बनाने वाली महिलाएं खाना बनाते समय धूएं के साथ विषैले तत्वों की सहनशील सीमा से 40 प्रतिशत से अधिक मात्रा श्वास के साथ ग्रहण करती है।

2. **वायु प्रदूषण से स्त्री**-पुरूषों के हृदय का आकार बढ़ रहा है।

3. मोटर गाड़ियों द्वारा छोड़े गए धुएं से हजारों लोग रोगों के शिकार हो रहे हैं।

4. शहरों के कुछ भागों में अत्यधिक वायु प्रदूषण रहता है। जो कि स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है।

5. हमारे देश में वायु प्रदूषण से विभिन्न रोगों से ग्रस्त होकर लाखों व्यक्ति प्रतिवर्ष मर रहे हैं।

वायु प्रदूषण रोकने के उपाय-

1. उद्योगों की स्थापना से पूर्व उनकी बसावट स्थिति के लिए एक आधार भूत योजना अथवा दिशा निर्देशन होना आवश्यक है। उद्योगों को कहां स्थापित करना है यह पहले से ही तय होना चाहिए।

2. कारखानों को आबादी से दूर लगाना चाहिए तथा उनकी चिमनियों को अधिक ऊंचा करके उनसे निकलने वाले धुएं को साफ करने के लिए विशेष फिल्टर का प्रयोग करना चाहिए।

3. गोबर तथा कूड़ा-करकट को इधर-उधर न फेंक कर आबादी के बाहर किसी गड्ढे में डालना चाहिए जिससे उनसे निकलने वाली दूषित वायु से वायु प्रदूषण कम हो।

4. पेट्रोल-डीजल से चलने वाले वाहनों का प्रयोग कम करना चाहिए अथवा उनकी वायु प्रदूषण उत्पन्न करने की क्षमता में कमी लाना चाहिए।

5. घरों में धूम्र रहित चूल्हों को काम में लाना चाहिए।

6. सम्पूर्ण क्षेत्र के 1/4 भाग में वनों का विकास करना चाहिए।

7. दैनिक हवन करने से भी वायु प्रदूषण से बचा जा सकता है।

डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अपनी पुस्तक 'संस्कार चन्द्रिका' में इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार किया है।

अब हम वेदों से कुछ मंत्र प्रस्तुत कर विषय को विराम देगें।

वसो पवित्रमसि द्यौरसि पृथ्व्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्वधाऽपरमेण धाम्नादृँ हस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपति ह्वार्षीत।। यजु. 1.2

अर्थ-हे विद्यायुक्त पुरूष। तू जो (वसो) यज्ञ (पवित्रम्) शुद्धि का हेतु (असि) है (द्यौः) जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य किरणों में स्थिर होने वाला (असि) है। जो (पृथिवी) वायु के साथ देश-देशान्तरों में फैलने वाला है। जो (मातरिश्वनः) वायु को (घर्मः) शुद्ध करने वाला (असि) है जो (विश्व धाः) संसार को धारण करने वाला (असि) है। जो (परमेण) उत्तम (द्याम्ना) स्थान से (दृँहस्व) सुख बढ़ाने वाला है। इस यज्ञ का (मा) मत (ह्वाः) त्याग कर तथा (ते) तेरा (यज्ञपतिः) यज्ञ की रक्षा करने वाला यजमान भी उसको (मा) नहीं (ह्वार्षीत) त्यागे।

निम्न मंत्र में बतलाया गया है कि प्रज्वलित अग्नि में दोषों को दूर करने वाले पदार्थों को डाल कर इष्ट सुखों को प्राप्त करना चाहिए।

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे।। यजु. 3.2

हे मनुष्य लोगों। तुम (सुसमिद्धाय) अच्छे प्रकार प्रकाश स्वरूप (शोचिषे) शुद्ध किये हुए दोषों को निवारण करने अथवा (जातवेद से) सब पदार्थों में विद्यमान (अग्नये) अग्नि में (तीव्रम्) सब दोषों के निवारण करने में तीक्ष्ण स्वभाव वाले (घृतम्) घी, मिष्ट आदि पदार्थों को (जुहोतन) अच्छे प्रकार सेवन करो।

अब एक मंत्र और देकर विषय को विराम देते हैं।

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन् महिषोदिवम्।। यजु. 3.7

अर्थ-जो (अस्य) इस अग्नि की (प्राणात्) ब्रह्माण्ड और शरीर के बीच में ऊपर जाने वाले वायु से (अपानती) नीचे को जाने वाले वायु को उत्पन्न करती हुई (रोचना) दीप्ति अर्थात् प्रकाश रूपी बिजली (अन्तः) ब्रह्माण्ड और शरीर के मध्य में (चरति) चलती है वह (महिषः) अपने गुणों से बड़ा अग्नि (दिवम्) सूर्य लोक को (व्यख्यन्) प्रकट करता है।

इस मंत्र में अग्नि के गुणों को बताया गया है। अग्नि को देवों का दूत कहा जाता है। हम यज्ञ में अग्नि में जो हव्य सामग्री डालते हैं, अग्नि उसे ऊपर जड़ देवताओं को पहुंचा देता है।

मकर संक्रान्ति उत्सव

14-1-2018 को आर्य समाज में संक्रान्ति का उत्सव मनाया गया। रविवार प्रातः साढ़े आठ से 10 बजे तक मकर संक्रान्ति उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। प्रातः संध्यावन्दन के पश्चात् वृहद् हवन यज्ञ हुआ जिस में आर्य समाज के सभी सदस्य उपस्थित हुये। सभी ने यज्ञ में आहुतियां डाली व यज्ञ के पश्चात् अरुण कुमार जी ने प्रभु भक्ति के भजन गाये। उसके पश्चात् श्रीमती कृष्णा देवी ने प्रभु भक्ति के भजन गाये। भजनों के पश्चात् पंडित परमानन्द जी ने मकर संक्रान्ती पर अपने विचार दिये और बताया कि इस दिन सूर्य उत्तरायण पक्ष की ओर जाता है और प्रकाश अधिक होता है। मकर संक्रान्ति के पश्चात् फसलें बढ़ती आरम्भ हो जाती हैं। सर्दी का प्रकोप भी कम होने लग जाता है। यज्ञ के पश्चात् प्रशाद वितरण किया गया।

पुरोहित परमानन्द आर्य

अनादि तत्व पांच हैं

ले०-पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबन्दि राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता

विज्ञ पाठकगण यह शीर्षक अनादि तत्व पाँच हैं पढ़कर चौंक जावेंगे कारण उन्होंने अभी तक अनादि तत्व तीन ही पढ़ा हुआ है, जिनके नाम है ईश्वर, जीव और प्रकृति। जिसे त्रैतवाद कहते हैं। विश्व में प्रचलित तीन वाद (विचारधारा) ही हैं। पहला अद्वैतवाद जिसमें केवल एक ईश्वर की ही सत्ता मानी गई है। उनका कहना है कि केवल एक ब्रह्म ही अनादि है। यानि विश्व में केवल एक ईश्वर ही है, बाकी जीव ईश्वर का अंश है और प्रकृति स्वप्रवत है। जैसे स्वप्न में हमें जो कुछ दिखाई देता है या अनुभव होता है, वह जागने के बाद कुछ नहीं रहता। स्वप्न में देखे हुए दृश्य का जैसे कोई महत्व या अस्तित्व नहीं होता। वैसे ही प्रकृति का भी कोई महत्त्व या अस्तित्व नहीं है। यह स्वप्नवत ही है। अद्वैतवाद को जैनियों और बौद्धों को हराने के लिए आदि शंकराचार्य ने चलाया था। इससे पहले पूरे विश्व में वैदिक धर्म और त्रैतवाद ही प्रचलित था। दूसरा वाद (विचारधारा) द्वैतवाद है जिसमें जीव और प्रकृति की सत्ता को स्वीकार किया है। ईश्वर की सत्ता को नहीं माना गया है। इन लोगों का मानना है कि जिस प्रकार गन्दी नाली में कीड़े स्वयं ही पैदा हो जाते हैं, वैसे ही प्रकृति स्वयं ही जीवों को पैदाकर देती है। जीव के जन्म-मरण में ईश्वर का कोई लेना-देना नहीं। जैसे सूर्य की गर्मी से समुद्र का पानी भाँप बन कर ऊपर चला जाता है और वहीं भाँप ठण्डक पाकर पानी बनकर जमीन पर बरस, जाता है। इसमें ईश्वर की क्या आवश्यकता है। सब काम प्रकृति स्वयं करती है। इस द्वैतवाद को मानने वाले जैन, बौद्ध व सी. पी. अम वाले हैं। ये केवल जीव और प्रकृति की सत्ता को ही मानते हैं। ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते। तीसरा वाद है त्रैतवाद, जो ईश्वर, जीव और प्रकृति, तीनों की सत्ता को अलग-अलग अनादि व अनन्त मानते हैं। यह वेदों पर आधारित है। महर्षि ने इसीलिए त्रैतवाद को माना है। त्रैतवाद मानता है कि ईश्वर ने जीव के लिए प्रकृति से यह सृष्टि रची। वैसे तो वेदों में अनेक मन्त्र है जो त्रैतवाद को सिद्ध करते है परन्तु यहाँ केवल एक प्रसिद्ध मन्त्र ही प्रस्तुत करते हैं, वह इसी भाँति है।

द्वा सुपर्णा सयुजा, सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोऽन्या, पिप्पलं स्वाद्वत्यन-श्रन्नन्यो अभि चाकशीति। (ऋग्वेद)

अर्थ-जो ब्रह्म और जीव दोनों चेतनता और पालनादि गुणों से कुछ सदृश, व्याप्य-व्यापक भाव से संयुक्त आपस में परस्पर मित्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और वैसे ही अनादि मूल रूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह तीसरा अनादि पदार्थ, इन तीनों के गुण, कर्म, स्वभाव भी अनादि हैं। इन जीव और ब्रह्मा में से एक जो जीव है वह इस वृक्षरूप संसार में पाप-पुण्य रूप फलों को अच्छी प्रकार भोगता है और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर-बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है। जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भिन्न-स्वरूप, तीनों अनादि हैं।

महर्षि दयानन्द ने इन तीन तत्त्वों, ईश्वर, जीव, प्रकृति को तो अनादि माना ही है, साथ ही अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में दो पदार्थ काल और आकाश को भी अनादि माना है। हम इनको साधारण अनादि भी मान सकते हैं। ऋषि जी ने इसी भाँति लिखा है।

किसी कार्य का आरम्भ समय से पूर्व, तीन कारण अवश्य होते हैं। जैसे कपड़ा बनाने के पूर्व तन्तु, रूई का सूत और नालिका आदि पूर्व वर्त्तमान होने से ही वस्त्र बनता है। वैसे ही जगत् की उत्पत्ति के पूर्व परमेश्वर, प्रकृति, काल और आकाश तथा जीवों के अनादि होने से इस जगत की उत्पत्ति होती है। यदि इनमें से एक भी न हो तो जगह भी न होवे। इस प्रकार महर्षि ने काल और आकाश को साधारण अनादि तत्व माना है और ईश्वर, जीव और प्रकृति, इन तीन को मुख्य अनादि तत्व माना है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

जीवन को सार्थक बनाएँ

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

पांच महायज्ञों में से एक है 'ब्रह्म यज्ञ' अर्थात् परमात्मा की उपासना करना। वास्तव में यदि गहराई से चिन्तन करें तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा संकलित सन्ध्या में पूरा अष्टांगयोग है। महर्षि दयानन्द जी ने सन्ध्या के मन्त्रों से पूर्व जो शीर्षक दिए हैं वे अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं तथा उनके अनुसार ही अपने चित्त की स्थिति को बनाकर सन्ध्या करें तो हमें उससे निश्चित ही आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होगा। मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य उपासना द्वारा प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करना ही है। इसी में जीवन की सार्थकता है अन्यथा जिसके हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना नहीं है वह जीवन तो पशुओं के समान ही है। इस सम्बन्ध में कबीर में भी बहुत ही सुन्दर कहा है-

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान,
जैसे खाल लुहार की सांस लेतु बिन प्राण।

जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति नहीं वह तो मानों वास्तव में ही मूर्दे के समान है क्योंकि यदि सांसों के आने-जाने को जी जीवन कहें तो वह तो लुहार की खाल भी वायु लेती है और छोड़ती है। इसलिए व्यक्ति को अन्य कार्य गौण और प्रभु-भक्ति मुख्य समझनी चाहिए। अभाग्य से आज इसके विपरीत हो रहा है जिसके कारण यह अनमोल मानव-जीवन अकारथ ही चला जा रहा है.... सन्ध्या में जब 'मनसा परिक्रमा' के मन्त्रों पर चिन्तन करने के बाद चित्तवृत्तियाँ प्रभु के ही चिन्तन में समाहित हो जाती हैं तो साधक को 'उपस्थान' की स्थिति प्राप्त होती है। उस समय वह तामसिक, राजसिक और सात्विक इन तीनों गुणों से ऊपर उठकर जिस स्थिति का साक्षात्कार करता है उसके सम्बन्ध में कहा गया है-

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगम ज्योतिरूत्तमम्।। (यजु.35-14)

अर्थात् वह (**तमसः**) सत्व, रज और तम रूपी अन्धकारमय प्रकृति से परे हो जाता है, छूट जाता है। उसका सीधा सम्पर्क (**उत्तरम्**) उत्कृष्ट चेतन जीवात्मा के साथ हो जाता है, उसे प्रंसख्यान की स्थिति प्राप्त हो जाती है, वह प्रकृति और पुरूष के भेद को साफ-साफ अनुभव करता है। सत्य और असत्य तथा विद्या और अविद्या के भेद को समग्रतः जानता है और फिर उससे भी आगे (**ज्योतिरूत्तमम्**) ज्योति की भी ज्योति उस परमात्मा की अनुभूति को प्राप्त हो जाता है। योग दर्शन के प्रथम पाद के तीसरे सूत्र में कहा गया है-**तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।** वह अपने निज आत्म-स्वरूप में आकर परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त होता है। वास्तव में परमात्मा को कहीं भी खोजने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह तो सर्वव्यापक है। साधना तो स्वयं को होता है, अपनी पहचान होने पर ही प्रभु का सान्निध्य स्वतः प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति इस स्थिति को कैसे प्राप्त करे इसका संकेत अगले मन्त्र में इस प्रकार मिलता है-

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरोऽअर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मुत्युं दधतां पर्वततेन।। (यजु.35-15)

इस मन्त्र में जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए मुख्यतः पांच महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए हैं। सबसे पहले तो (**इमम् परिधिम्**) व्यक्ति को अपना जीवन मर्यादित करना चाहिए अर्थात् वेद एवं आप्तपुरूषों द्वारा निर्देशित मर्यादाओं का दृढ़ता के साथ अनुपालन करना चाहिए। उसमें किसी प्रकार की भी ढील नहीं देनी चाहिए। यदि हम उपासना के प्रसंग में वेद के इस आदेश को लें तो साधक को सर्वप्रथम यमों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक करना अपेक्षित है अन्यथा आगे उपासना में गति कदापि नहीं हो सकती है। यमों की ये मर्यादाएँ ही उसके जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकती हैं। यमों का अनुपालन करना ही साधक की उपासना का प्रबल आधार है।

दूसरी बात कही गई है (**एतम् अर्थ**) सब कोई अपने **पुरूषार्थ से** ही धनार्जन का विचार करे, कोई किसी दूसरे के धन की कामना आदि न करे.... वेद में अन्यत्र भी इसी

(शेष पृष्ठ 8 पर)

वेदवाणी

प्रभो! हमारे बन्धनों को शिथिल कर

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

-ऋ० १।२४।१५; यजुः० १२।१२; साम० पू० ६।३।१०।४; अथर्व. ७।८३।३

ऋषि-शुनः शेपो देवरातः।। देवता-वरुणः।। छन्दः-त्रिष्टुप्।।

विनय-हे पापनिवारक देव! तूने हमें तीन बन्धनों से बाँध रखा है। उत्तम बन्धन हमारे सिर में हैं, जिससे हमारा आनन्द और बुद्धि बंधे हुए हैं, ढके हुए हैं, रुके हुए हैं। यह सत्त्वगुण का (कारणशरीर का) बन्धन कहा जा सकता है। हृदयस्थ मध्यम बन्धन से हमारा मन और सूक्ष्म प्राण बँधे हुए हैं। यह रज और सूक्ष्म शरीर का बन्धन है। नाभि से नीचे तमोगुण और स्थूल शरीर का अधम बन्धन है, जिससे हमारा स्थूल प्राण और स्थूल शरीर बँधा हुआ है। हे वरुण! इनसे बँधे रहने के कारण हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होता रहता है और हम पापी बनते रहते हैं। उत्तम बन्धन द्वारा, सच्चा ज्ञान न मिनले से; मध्यम द्वारा राग-द्वेष, काम-क्रोध आदि के वशीभूत होने से; और अधम द्वारा, शरीर से त्रुटियुक्त कार्य करने से हम पापी बनते हैं। हे देव! तू हमारा उत्तम पाश ऊपर की ओर खोल दे, जिससे कि मेरी बुद्धि का द्युलोक के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाए और मुझमें सत्य-ज्ञान का प्रवेश होने लगे। मध्यम पाश को बीच से खोल दे जिससे अन्तरिक्षलोक के समुद्र में मेरे मन के प्रविष्ट हो जाने से इसके राग-द्वेषादि मल धुल जाएँ तथा मेरा मन सम हो जाए और अधम पाश को नीचे गिरा दे जिससे मेरे पार्थिव शरीर के सब कलुषित परमाणु पृथिवीतत्त्व में लीन हो जाएँ और हमारा शरीर नीरोग, स्वस्थ तथा निर्दोष होकर प्रभु के कार्य कर सके। हे प्रकाशमय बन्धनरहित देव! इन बन्धनों के टूट जाने पर हम तेरे व्रत में रह सकेंगे, हमसे तेरे नियमों का भङ्ग होना बन्द हो जाएगा। अन्त में मैं 'अदिति' (मुक्ति) के ऐसा योग्य हो जाऊँगा कि एक दिन आयेगा जबकि मेरा आत्मा स्थूल शरीर रूपी बन्धन को नीचे पृथिवी पर छोड़कर और मानसिक सूक्ष्म शरीर को अन्तरिक्ष में लीन करके अपने ऊपरी बन्धन के भी टूट जाने से ऊपर-द्युलोक-को प्राप्त हो जाएगा। बिना इन तीन बन्धनों के ढीले हुए मैं मुक्ति की ओर कैसे जा सकता हूँ? इसलिए, हे वरुण! इन बन्धनों को एक बार खोल दो-तनिक ढीला कर दो-जिससे कि मेरा मार्ग साफ़ हो जाए और मैं यत्न करता हुआ तेरे व्रत में रहने वाला निष्पाप, मोक्षाधिकारी हो जाऊँ।

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जन्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायति जी के सानिध्य में दिनांक 8 से 15 अप्रैल-2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाऐगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिवर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यान्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें। **-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान**

बसन्त पंचमी पर्व मनाया

आज आर्य समाज खलासी लाईन में, स्थापना दिवस, बसंत पंचमी वीर हकीकत राय बलिदान दिवस पर विशेष यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री सपत्नी रहे। यज्ञ श्री सुरेन्द्र कुमार चौहान के पुरोहित्य में हुआ। यजमानों को आर्शीवाद वैदिक विद्वानों ने दिया। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री जी ने अपने प्रवचन में कहा बसंत पंचमी बहुत ही उल्लास व उमंग का वातावरण है। नयापन जो प्रकृति का रूप है नवीनता के सांचे में ढलने लगता है। नवीनता बनी रहे निराशा न हो संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। चारों तरफ अज्ञान, अविधा और पाखण्ड का अंधकार छाया हुआ है, आज हम अपने मूल से कट गए हैं। स्वामी जी को ये देखकर बहुत पीड़ा हुई कि इतना बड़ा वैभवशाली देश आज दुर्गति में क्यों? रोग बड़ा गहरा है इसका निराकरण उन्होंने एक ही दिया था वेदों की ओर चलो "Back to Vedas" वास्तव में आज अविधा, अज्ञान व पाखण्ड का प्रचार प्रसार हो रहा है। मनुष्य को मनुर्भवः का संदेश सतत् निरन्तर देना आर्य समाज का कर्तव्य है। निरन्तर चलते रहना चाहिए चरेवेति, चरेवेति। आर्य समाज के सारे सिद्धांत वेदानुकूल हैं। सन्यास धर्म में जो आत्मतत्व था वह खत्म हो गया है। डण्डे लाठी खाकर जहर पीकर विषधरों को सहन कर भी महर्षि दयानंद सरस्वती जी अपने लक्ष्य से नहीं भटके। आर्य समाज का स्थापना दिवस हमें अपने कर्त्तव्यों व दायित्वों की याद दिलाता है। बाल हकीकत राय का बलिदान भी आज ही हुआ था। बच्चों को संस्कारविहीन शिक्षा दी जा रही है। बच्चे आज अपने महापुरूषों के नाम भी नहीं जानते। यह हमारा दुर्भाग्य है। सत्य के मार्ग पर चलने से दूसरों का भी कल्याण होगा और हमारा अपना भी कल्याण होगा।

मंच संचालन श्री नरेन्द्र गर्ग ने किया तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विजय कुमार गुप्ता जी, प्रधान आर्य समाज ने की। तत्पश्चात् शांतिपाठ व प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और उपस्थिति निम्न रही। सुदेश राणा, रोशनलाल, बाबूराम यादव, नीलम क्वात्रा, शांति देवी, रविकांत राणा, राजकुमार आर्य, अनिल मारवाह, रामकिशोर सैनी, ओमप्रकाश आर्य, आशा आर्या, शोभा आर्या, सुरेन्द्र यादव, डॉ. राजवीर सिंह वर्मा, श्रीमति कलावती, मधु आर्या, रघुनंदन प्रसाद आर्य, रमा देवी, सुरेश सेठी, योगराज शर्मा आदि उपस्थित रहे। **-रविकान्त राणा मन्त्री, आर्य समाज**

बसन्त पंचमी पर्व मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में वसन्तोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसमें कक्षा नर्सरी से लेकर कक्षा U.K.G के बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। नन्हें मुन्ने बच्चे पीले रंग के परिधान में बड़े सुन्दर नज़र आ रहे थे। बच्चों ने पीले रंग का हल्वा, पीले चावलों का लुत्फ उठाया। बच्चों ने खूब मौज मस्ती की। स्कूल में बच्चों को इस दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला गया। प्रिंसीपल मैडम ने सभी बच्चों को एवं समस्त स्टाफ को इस उत्सव की बधाई देते हुए कहा कि यह ऋतु सम्बन्धी त्यौहार होने के साथ-साथ इसका धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। हमें वीर हकीकत राय के बलिदान को कभी नहीं भुलाना चाहिए, जिसने धर्म की खातिर अपना बलिदान दे दिया। साहित्य जगत के कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की कविता भी पढ़ कर सुनाई गई।

पृष्ठ 7 का शेष-जीवन को सार्थक बनाएँ

प्रकार का आदेश दिया गया है कि हमें लोभ के वशीभूत होकर किसी दूसरे के धन की कामना नहीं करनी चाहिए। मनु महाराज तो कहते हैं कि जो अधर्म का सहारा लेकर धन कमाता है वह कभी भी आदर्श जीवन को प्राप्त नहीं हो सकता है। आगे कहा गया- **(शरदः शतम्)** हम सौ वर्ष तक जीने की कामना करें मगर केवल कामना भर करने से कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है बल्कि हमारा आचार-व्यवहार और दिनचर्या मर्यादित हो। उत्तम खान-पान, व्यायाम, प्राणायाम आदि के द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ बनाना चाहिए। शरीर की कभी भी अवहेलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि हमारी समस्त क्रियाओं का आधार यह शरीर ही है। हम सौ वर्ष तक जीने की कामना करें मगर कर्म करते हुए... सन्ध्या में भी सौ वर्ष तथा उससे भी अधिक अदीन होकर जीने की कामना की गई है। **(पुरूचीः)** हमारी प्रत्येक क्रिया हमारे जीवन को पूर्णता देने वाली हो। गीता में बहुत ही सुन्दर बात कही गई है कि हम स्वयं ही अपने मित्र हैं और स्वयं ही अपने शत्रु भी।

यदि हम वेदानुसार अपने जीवन को बनाऐंगे तो मानों अपने मित्र हैं और वेद के विपरीत कार्य करेंगे तो स्वयं ही अपने शत्रु बन जाऐंगे अर्थात् स्वयं ही स्वयं के लिए दुःख एवं क्लेश पैदा कर लेंगे.... हमारे कार्य ऐसे होने चाहिएं जो हमारा किसी प्रकार से भी विनाश न करें बल्कि सर्वदा विकास ही करें। आगे वेद में और भी उत्तम बात कही गई है- **(अन्तः मृत्युम् दधताम्)** हम परमात्मा के **रूद्र-रूप** (न्याय करने वाले) को तथा **मृत्यु** को सदा ही स्मरण रखें..... हमें इस सिद्धान्त को अपने हृदय में बिठाकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए कि परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में यदि हम अच्छा कर्म करेंगे तो पुरस्कार मिलेगा और यदि बुरा कर्म करेंगे तो दण्ड मिलेगा। किसी नदी का स्नान, कोई गुरू, पीर या पैगम्बर हमें हमारे पाप-कर्मों के दण्ड से मुक्ति नहीं दिला सकता है क्योंकि परमात्मा न्यायकारी है। प्रभु ने हमें कर्म करने में स्वतन्त्र रखा है मगर उस कर्म का फल प्रभु ने अपने हाथ में रखा है। इसलिए प्रभु के उस रूद्र-रूप को सदा ही अपने सामने रखना चाहिए। जैसे प्रभु के रूद्र-रूप को स्मरण रखना है उसी प्रकार मृत्यु को भी सदा स्मरण रखना है। जो व्यक्ति मृत्यु को स्मरण रखता है वह कभी भी पापकर्म नहीं कर सकता है। मृत्यु को स्मरण रखने का यह भाव लिया जाना अति-उत्तम है कि हमें जीवन के जितने भी क्षण मिले हैं इनका उपयोग निरन्तर पुण्य कमाने के लिए कर लें, पता नहीं कब सांसों का आना-जाना समाप्त हो जाए.....

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।